नाट्यशास्त्र: भारतीय ज्ञान परंपरा और संचार का शाश्वत विमर्श

- अमित शर्मा

यूनेस्को ने इस बार विश्व धरोहर दिवस पर भारत के आदिग्रंथ श्रीमद्भग्वदगीता और भरत मुनि रचित नाट्य शास्त्र को अपने स्मृतिकोष में शामिल किया है। यूनेस्को के विश्व स्मृति रजिस्टर में विश्व की महत्वपूर्ण पांडुलिपियों को शामिल करने का उद्देश्य इन धरोहरों को संरक्षित रखना और इनमें दर्ज ज्ञान को दुनिया के सामने लाना है। ऐसे में भारत की शाश्वत ज्ञान परंपरा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की महत्ता एक बार फिर वैश्विक स्तर पर स्थापित हुई है।

श्रीमद्भग्वदगीता आदिग्रंथ महाभारत के भीष्मपर्व का अंग है। इसमें वर्णित निष्काम कर्म को आधुनिक मैनेजमेंट गुरु भी जीवन जीने की कला का आधारमंत्र मानते हैं। गीता के ज्ञान की व्याख्या हमारे समाज में काफी प्रचलित रही है। लेकिन भरत मुनि रचित नाट्यशास्त्र के बारे में आमजन उतना परिचित नहीं हैं। जबकि इसे आधुनिक संचार सिद्धांतों का प्रेरणा आधार माना जाए तो ये अतिश्योक्ति नहीं होगा।

भरत मुनि रचित नाट्यशास्त्र को भारत की ललित कलाओं का प्राचीन ग्रंथ माना जाता है। भरत मुनि लगभग दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के एक महान ऋषि और विद्वान थे। संस्कृत में रचित इनका ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' कुल 36 अध्यायों में विभाजित है। इसमें नाट्यकला के सभी अंगों - अभिनय, संवाद, रस, संगीत, नृत्य, रंगमंच की संरचना, भावों की अभिव्यक्ति तथा दर्शकों पर प्रभाव डालने की विधियों का विस्तार से वर्णन है। भरत मुनि ने नाट्यकला को 'पंचम वेद' की संज्ञा दी है – एक ऐसा माध्यम जो वेदों के ज्ञान को आम जन तक पहुंचाने में सक्षम है। भरत मुनि ने नाटक को "लोक शिक्षाय कामार्थम्" अर्थात् लोक(आमजन) को शिक्षा और आनंद देने वाला माध्यम बताया है। यह परिभाषा नाट्य को एक प्रभावी संचार साधन के रूप में भी स्थापित करती है। दरअसल भरत मुनि का नाट्यशास्त्र केवल प्राचीन नाट्यकला का दस्तावेज नहीं, बल्कि एक अत्यंत आधुनिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला संचार-सिद्धांत भी है।

संचार (Communication) आधुनिक समाज का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। संचार क्रांति ने हमारी पूरी दुनिया ही बदल दी है। अखबार,रेडियो,टीवी से लेकर डिजिटल मीडिया तक -हम संचार माध्यमों से घिरे हैं।

क्या हैं संचार?

संचार को समझने के लिए कई संचार सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं। इऩमें विदेशी संचार

सिदधांत और भारतीय संचार सिद्धांत दोनों शामिल हैं। परंतु दोनों में कुछ आधारभूत विभिन्ताएं दिखती हैं। विदेशी संचार सिद्दांतों का विकास आधुनिक पश्चिमी समाज की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए हुआ है। इऩका जोर संदेश के प्रसारण की प्रक्रिया और माध्यम के प्रभाव पर ज्यादा रहता है। वहीं भारतीय संचार सिद्धांत संदेश को इसके मूल रुप में समझने और इस समझदारी को विकसित करने पर जोर देते हैं। भारतीय संचार सिद्धांत दर्शन, अनुभूति और सांस्कृतिक अनुभव पर आधारति हैं। भारतीय संचार परंपरा में संदेश सिर्फ जानकारी भर नहीं है बल्कि भाव और अनुभव का संचार है। संचार का उद्देश्य सिर्फ बताना नहीं बल्कि अनुभव कराना है। भारत की प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर में भरत मुनि रचित नाट्यशास्त्र एक ऐसा ग्रंथ है, जो इसी भावपूर्ण संप्रेषण की महत्ता प्रतिपादित करता है। यह न केवल रंगमंच और नाट्यकला का वैज्ञानिक दस्तावेज है, बल्कि संचार के सिद्धांतों का भी गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह ग्रंथ आज भी नाट्य, सिनेमा, मीडिया और संवाद प्रक्रिया के अध्ययन में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। कई विद्वान मानते हैं कि इसी पूर्वी दर्शन और कला शास्त्र ने अप्रत्यक्ष रुप से संचार की वैश्विक विचारधारा को भी प्रभावित किया है। कई विद्वानों का तर्क है कि नाट्यशास्त्र के रस सिद्दांत में संचार का जो गहराईपूर्ण विश्लेषण है, वो कई आधुनिक सिद्धांतों से अधिक विकसित है।

'नाट्यशास्त्र' में समानता के सूत्र

कई आधुनिक संचार मॉडलों में समानता के सूत्र भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में साफ दिखाई देते हैं। संचार प्रक्रिया को समझने के लिए 'शैनन-वीवर मॉडल' का पश्चिमी संचार मॉडलों में प्रमुख स्थान है। इसे अमेरिका के वैज्ञानिकों क्लाउड शैनन और वैरेन वीवर ने 1948-49 में प्रतिपादित किया था। इस संचार मॉडल ने बाद के कई पश्चिमी संचार सिद्धांतों को प्रभावित किया। इसमें प्रतिपादित किया गया है कि संचार एक प्रक्रिया है जिसमें प्रेषक (Sender), संदेश (Message), माध्यम (Medium), ग्रहणकर्ता (Receiver), और अभिपुष्टि (Feedback) शामिल होते हैं। आश्चर्य की बात है कि नाट्यशास्त्र में यह प्रक्रिया हजारों वर्ष पहले ही व्याख्यायित की जा चुकी थी। बल्कि भरत मुनि का संचार का दृष्टिकोण समग्र (holistic) है जिसमें व्यक्ति, समाज, भावनाएँ और भाषा – सभी शामिल होते हैं।

इसी तरह सन् 1960 में अमेरिका के विद्वान डेविड बर्लो ने एक मॉडल प्रतिपादित किया जिसे बर्लों एसएमसीआर मॉडल (Berlo's SMCR Model) के नाम से जाना जाता है। बर्लों संचार प्रक्रिया में प्रेषक(Sender), संदेश (Message), माध्यम (Channel), ग्रहणकर्ता

(Receiver) के तत्वों को महत्वपूर्ण मानते हैं। इसके साथ ही बर्लो संदेश के प्रभावशाली संप्रेषण की बात कहते हैं। भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में संप्रेषण के ये सभी तत्व शामिल हैं। नाट्यशास्त्र के अनुसार संचार का अंतिम उद्देश्य रसों की अभिव्यक्ति और संदेश का भावात्मक अनुभव है। नाट्यशास्त्र बताता है कि संदेश की सफलता तभी है जब वो दर्शकों के अंतर्मन को छू ले।

इसी तरह संकेत-प्रतीक आधारित संचार मॉडल (Semiotic Model) दर्शाता है कि संचार, संकेतों और प्रतीकों के माध्यम से भी होता है। जैसे - रंगों के अलग-अलग अर्थ होते हैं। शारीरिक मुद्राओं से संकेतों का आदान प्रदान हो जाता है। वेशभूषा से सामाजिक वर्ग या मनोदशा का प्रदर्शन होता है। भरत मुनि रचित नाट्यशास्त्र का सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण योगदान है – रस सिद्धांत और भाव संप्रेषण। भरत मुनि ने कहा है कि भावों के संयोग से रस की उत्पत्ति होती है। रस वो भाव है जो दर्शकों में उत्पन्न होता है, जैसे- करुणा, हास्य, रौद्र, शांत आदि। कलाकार अपनी वाणी, मुखमुद्रा, शारीरिक हाव-भाव आदि से इन रसों को दर्शकों तक पहुंचाता है। इस प्रकार रस केवल सौंदर्यबोध नहीं, बल्कि एक सशक्त संचार प्रक्रिया है। यहां नाट्यशास्त्र एक अत्यंत संवेदनशील संचार प्रक्रिया का वर्णन करता है जहां शब्दों से अधिक भावनाओं की भूमिका होती है। दर्शक कलाकार के साथ आत्मीयता अनुभव करते हैं और उसी भाव का अनुभव करते हैं – यहीं सफल संचार का मूल तत्व है। इसी तरह नाट्यशास्त्र में भरत मुनि ने अभिनय के भी चार प्रकार बताए हैं जो मूलत: संचार के विभिन्न माध्यम की तरह कार्य करते हैं। भरत मुनि ने वाचिक, आंगिक, सात्त्विक और आहार्य अभिनय के माध्यम से प्रतीकों और संकेतों को विस्तार से समझाया है। पहला, वाचिक अभिनय जिसमें संवाद और उच्चारण से विचारों का संप्रेषण किया जाता है। यह आज के आडियो माध्यम जैसे रेडियो,पॉडकास्ट आदि की तरह है। दूसरा, आंगिक अभिनय जिसमें शारीरिक गति, इशारों और मुद्राओं से संप्रेषण होता है। यह नॉन-वर्बल कम्यूनिकेशन का आधार है। तीसरा, सात्त्विक अभिनय जिसमें आंतरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए अंतर्मन के प्रतीकों का सहारा लिया जाता है। जैसे आंखों में आंसू, भय का कंपन, ह्रदय का धड़कना आदि दिखाते हैं कि संचार सिर्फ बाह्य नहीं बल्कि अंतर्मन से भी होता है। चौथा, आहार्य अभिनय जिसमें वेशभूषा,मंच-सज्जा आदि शामिल है। यह दृश्य प्रभाव के माध्यम से संचार है। आधुनिक फिल्मों में सेट-डिजाइन और कास्ट्यूम का इस्तेमाल कर प्रभावी संचार स्थापित किया जाता है।

इसी तरह एक प्रसिद्ध पश्चिमी संचार सिद्धांत है – उपयोग और संतुष्टि सिद्धांत (Uses and Gratification Theory) । इसके अनुसार लोग सक्रिय रुप से मीडिया का चयन करते हैं और इसका उपयोग अपनी जरुरतों को पूरा कर संतुष्टि प्राप्त करने के लिए करते हैं। इन जरुरतों के

चार प्रमुख तत्व हैं – मनोरंजन, सूचना, भावनात्मक राहत, सामाजिक जुड़ाव। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र भी कहता है कि नाटक का उद्देश्य सिर्फ मनोरंजन नहीं बल्कि मूल्यपरक शिक्षा और सूचना भी है। इसके साथ ही नाटक से दर्शक भावनात्मक जुड़ाव महसूस करते हैं और साथ ही ये सामाजिक जुडाव की भी वजह बनता है। इस तरह यूजेस एंड ग्रेटिफिकेशन थ्योरी के चारों तत्व भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में पहले से निहित हैं।

भरत मुनि का नाट्यशास्त्र न केवल भारतीय रंगमंच की नींव है, बल्कि इसकी गणना संचार विज्ञान के सर्वप्रथम और प्रमुख ग्रंथ के रुप में भी की जा सकती है। यह भारत में संचार सिद्धांतों की नींव रखने वाला ग्रंथ है। इसमें संचार की वैज्ञानिक और कलात्मक विधियों को जिस प्रकार से प्रस्तुत किया गया है, वह आज के आधुनिक संचार माध्यमों के लिए भी मार्गदर्शक है। यह एक समृद्ध, संवेदनशील और बहुआयामी संचार प्रक्रिया है, जिसे आधुनिक तकनीक और मीडिया माध्यमों में भी अपनाया जा रहा है।

इस तरह भरत मुनि का नाट्यशास्त्र भारत के शाश्वत ज्ञान का प्रतीक है। यह भारत की सांस्कृतिक धरोहर होने के साथ-साथ नाट्यकला और वैश्विक संचार साहित्य की भी एक अमूल्य निधि है। यूनेस्को ने इसे विश्व स्मृति रजिस्टर में दाखिल कर इसी मान्यता की पुष्टि की है।

संदर्भ सूची

Bharata Muni. (n.d.). *Nāṭyaśāstra* (M. M. Ghosh, Trans.). Asiatic Society.

Berlo, D. K. (1960). *The process of communication: An introduction to theory and practice*. Holt, Rinehart and Winston.

Gerow, E. (1977). Indian poetics. In J. Gonda (Ed.), *A history of Indian literature*. Otto Harrassowitz.

Ghosh, M. M. (Trans.). (1951). *The Nāṭyaśāstra: Ascribed to Bharata-Muni* (Vol. 1). Asiatic Society.

Katz, E., Blumler, J. G., & Gurevitch, M. (1973). Uses and gratifications research. *Public Opinion Quarterly*, *37*(4), 509–523. https://doi.org/10.1086/268109

Richmond, F. P., Swann, D. L., & Zarrilli, P. B. (Eds.). (1993). *Indian theatre: Traditions of performance*. University of Hawai‘i Press.

Shannon, C. E., & Weaver, W. (1949). *The mathematical theory of communication*. University of Illinois Press.

UNESCO. (2025). *Manuscript of the Nāṭyaśāstra of Bharatamuni: A seminal text of Indian performing art*. Memory of the World Register.
UNESCO. (2025). *Manuscript collection of Bhagavadgītā: Ancient Saṁgraha-grantha of Indian thought with world-wide readership and influence*. Memory of the World Register.

UNESCO. (2025). *Memory of the World International Register*